thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 17 रोहतक, 28 सितम्बर, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

उपासना के मायने

❑ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

सरकारी सेवा से सेवानिवृत होने के उपरान्त उस पद में निहित शक्तियों से विहीन होने के कारण बीमार पड़ गए अपने एक साथी को देखने गया। उनकी अर्धांगिनी ने बताया कि आजकल बीमारी की हालत में सारा दिन खाली होते हैं। सारा जीवन नास्तिक रहे लेकिन अब किसी गुरु के डेरे पर जाकर नाम धारण कर लिया है। सारा दिन माला लेकर नाम जपते उपासना करते हैं। यह बताते हुए उनकी पत्नी के चेहरे पर संतोष का एक भाव आया जिसे मैंने साफ-साफ पढ़ लिया।

परन्तु अब चिन्तन करने की मेरी बारी थी। मैं सोचने लगा कि क्या अपने कष्ट की अवस्था में किसी नाम विशेष के जाप मात्र को ही उपासना कहते हैं। बीमार पड़े, व्यापार में घाटा हुआ, गृह-क्लेश, पुत्र वियोग या अन्य कोई दु:ख या कष्ट या फिर किसी लाभ विशेष की आशा में किसी गुरु द्वारा दिया गया नाम या मंत्र और उसका गिनकर जाप करना या करवाना ही उपासना कहलाता है। कहीं ऐसी उपासना के नाम पर हम खुद को धोखा तो नहीं दे रहे या फिर ऐसा 'नाम' देने वाले 'गुरु' हमारा शोषण तो नहीं कर रहा।

बस इसी विचार को लेकर कुछ चिन्तन किया जो पाठकों के समक्ष है। उपासना शाब्दिक अर्थ है निकट समीप नीचे आसन। उपासना कौन किसकी करता है ? हम मनुष्य उपासक के रूप में अपने उपास्यदेव सृष्टि के रचयिता और हम मनुष्यों को प्रकृति का समस्त ऐश्वर्य बड़ी सुलभता के साथ उपयोग उपभोग के लिए देने वाले सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी, ऐश्वर्यशाली उपास्य देव ईश्वर की उपासना करते हैं। अब प्रश्न उठता है कि उपासना की सही विधि क्या है ? एक उपासक कैसे अपने उपास्य ईश्वर की उपासना कर सकता है।

उपासना के सामान्य अर्थ से इसकी विधि को समझने का प्रयास करते हैं। हम कैसे अपने ईश्वर के निकट पहुँचें ताकि वहाँ आसन लगाकर उपासना कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि पहले हमें अपनी स्थिति, अपने उपास्य ईश्वर की स्थिति और उस मार्ग का ज्ञान होना चाहिए जिस पर चलकर एक उपासक अर्थात् हम अपने उपास्य देव ईश्वर तक पहुँच सकें। अब अगला प्रश्न उठता है कि हमारी स्थिति क्या है, मैं कौन हूँ और कहाँ पर हूँ। मैं अक्सर कहता हूँ कि यह मेरा हाथ है, मेरी आँखें हैं, यह मेरा शरीर है, अर्थात् मेरी यह भौतिक अवस्था मनुष्य का चोला, शरीर मेरा साधन है। मुझे यह साधन अर्थात् मनुष्य का शरीर परमपिता परमेश्वर न्यायकर्त्ता ने मेरे पूर्वजन्मों के कर्मों के आधार पर न्याय तुला पर तोलते हुए एक साधन के रूप में मुझे प्रदान किया। अर्थात् मैं इस साधन मनुष्य शरीर की प्राप्ति से पूर्व भी था और पश्चात् भी रहूँगा। इस चिन्तन से स्पष्ट हुआ कि मैं एक जीवात्मा हूँ जो कि इस शरीर का शरीरी, देह का देही, रथ का रथी अर्थात् इस मनुष्य शरीर रूपी साधन का अधिपति स्वामी एक साधक हूँ। मुझे यह साधन मेरे पूर्व के कर्मों के आधार पर न्यायकर्त्ता ईश्वर ने प्रदान किया है। मेरे इस साधन का उद्देश्य अपने उस साध्य अर्थात् ईश्वर को पा लेना है।

अपनी स्थिति को जानने के उपरान्त अपने उपास्य ईश्वर की स्थिति को जान लेना आवश्यक है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रथम मंत्र **'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्'** में ईश्वर का पता दिया गया है। आर्यसमाज के दूसरे नियम में महर्षि दयानन्द ने ईश्वर को सर्वव्यापी और कण-कण में विद्यमान बतलाया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि उपासक को अपने ईश्वर उपास्य की उपासना के लिए कहीं किसी गुरु विशेष के डेरे या तथाकथित तीर्थ पर भटकने की आवश्यकता नहीं है। योगेश्वर कृष्ण ने ईश्वर को सर्वव्यापी के साथ ही **'ईश्वर सर्वभूतानां हृदयेशे तिष्ठति'** कहकर ईश्वर को अति सूक्ष्म रूप में हम सभी जीवात्माओं में विद्यमान भी बतलाया। महर्षि दयानन्द ने भी ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हुए सर्वान्तर्यामी बतलाया। इससे तो यह स्पष्ट हो गया कि ईश्वर हमारे निकट आत्मा में ही विद्यमान है। ईश्वर से हमारी दूरी आंख से भौंह की दूरी से भी कम है। हमारे निकटस्थ यदि कोई है तो वह हमारा ईश्वर ही है।

जब मैं और मेरा ईश्वर मेरे ही अन्दर एक साथ विद्यमान है तो फिर उपासना तो स्वत: हो गई। लेकिन यथार्थ इससे भिन्न है। यह ठीक है कि ईश्वर हमारे निकटस्थ है पर क्या हम खुद अपने निकटस्थ रहने वाले ईश्वर के पास हैं। हमारी स्थिति ठीक वैसी है, जैसे बस में यात्रा करते हुए खिड़की से बाहर देखते निहारते हमें अपने सहयात्री की कोई खबर नहीं रहती। हम ईश्वर प्रदत्त प्रकृति के ऐश्वर्यों के भोग और दोहन में इतने निमग्न हो जाते हैं कि अपने निकटस्थ ईश्वर का आभास भी नहीं कर पाते और इतने कृतघ्न हो जाते हैं कि इस समस्त ऐश्वर्य के प्रदाता का धन्यवाद भी नहीं करते। **तेन त्यक्तेन भुंजीथा** अर्थात् त्याग पूर्वक भोग करने के स्थान पर हम तो भोगवाद में डूब जाते हैं। हमारी हालत मधु में डूबकर तड़पती मधु-मक्खी सरीखी हो जाती है जो प्रकृति के ऐश्वर्य के भोग में फँसकर साधन आधीन हो जाते हैं। यह साधन आधीन होने की हालत पराधीन से बुरी है। साधन आधीन में तो हम चेतन होकर भी जड़ के आधीन रहते हैं। ईश्वर से हमारी दूरी न तो काल की है न ही स्थान की अपितु केवल हमारी अज्ञानता की है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के पांचवें मंत्र में कहा गया है—**'तद्दूरे तद्वन्तिके'** अर्थात् वह ईश्वर तो हमारे अत्यन्त निकट है लेकिन अपनी अज्ञानता अबोधता के कारण हम उस ईश्वर से बहुत दूर हैं। वह ईश्वर तो हमारे पास है और हम उस ईश्वर को अपनी अज्ञानता अबोधता के कारण पूरा जीवन बाहर ना जाने किस-किस डेरे तीरथ पर ढूंढ़ते मारे-मारे फिर रहे हैं। अत: उपासना के लिए आवश्यक है कि हम अज्ञानता को दूर करके अपने ईश्वर और अपनी स्थिति को समझें और अपने ईश्वर के निकट रहें। महर्षि दयानन्द उपासना को आर्योद्देश्यरत्नमाला में परिभाषित करते हुए लिखते हैं जब मनुष्य का आत्मा आनन्दस्वरूप परमात्मा के आनन्द में निमग्न होकर नर्तन करने लगे उसे उपासना कहते हैं। यहाँ आनन्द में नर्तन करने का अभिप्राय है कि हम ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन करें। इसके लिए प्रत्येक स्थिति में हमें अपनी अन्तरात्मा से आने वाली प्रत्येक ईश्वरीय प्रेरणा का पालन करें। इसके लिए हम कह सकते हैं—

मेरे मन में चल रहा, देवासुर संग्राम।
रहती बस यह कामना, जीतें सदा श्रीराम॥

यहाँ श्रीराम देवीय भावनाओं की विजय का प्रतीक है कि प्रत्येक कार्य को करने के लिए उद्यत होने से पूर्व मन में उत्पन्न होने वाली संकल्प विकल्प की स्थिति में सदैव दैवीय भावनायें आसुरी शक्तियों पर विजयी हों अर्थात् हम ईश्वरीय प्रेरणा अन्तरात्मा की आवाज पर केवल निस्वार्थ भाव से परोपकार के कार्य किया करें और हमारे कार्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष की भावनाओं से प्रेरित न हों। जब हम जीवन के प्रत्येक कार्य में ईश्वरीय आज्ञा का पालन करेंगे तो हम कह सकते हैं कि उपासना करते हुए उपासक और उपास्य देव निकट हो गए हैं।

संपर्क-602 जी.एच. 53, सै० 20, पंचकूला, मो० 09467608686

thearyasamaj.org

क्या महर्षि दयानन्द ने वेद जर्मनी या इंग्लैण्ड से मंगाये थे?

❑ मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने 10 अप्रैल 1875 ई. को आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्य समाज का तीसरा नियम है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। आर्य समाज का पहला नियम विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिसमें कहा गया है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है। इस नियम को अभी यूरोप के वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार किया जाना है। वैज्ञानिकों ने पृथिवी व अन्य ग्रहों का अध्ययन कर अनेक नये तथ्यों का उद्घाटन किया है परन्तु वह अभी तक सृष्टि की उत्पत्ति का सर्वमान्य व सर्व स्वीकार्य मत या सिद्धान्त बता नहीं पाये। हमें लगता है कि आर्यसमाज का प्रथम नियम विज्ञान सम्मत व सृष्टि नियम के अनुकूल व अनुरूप है और भविष्य में विज्ञान इस नियम की अवश्यमेव पुष्टि करेगा। वेद का एक अर्थ ज्ञान होता है जो प्रायः विद्या के पर्याय के रूप में ही अधिकतर प्रयोग किया जाता है। अब यदि समस्त ज्ञान व विद्या का आदि मूल परमेश्वर है तो सृष्टि के आरम्भ व आदि काल में अमैथुनी सृष्टि के प्रथम व आदि मनुष्यों, स्त्री व पुरुषों को, उससे ज्ञान व विद्या का मिलना इसलिए स्वीकार करना होगा कि अन्यथा होने पर मनुष्य अज्ञानी व मूर्ख रहेगा और ईश्वर ज्ञान न देने से सर्वशक्तिमान व धर्मात्मा न होकर ज्ञान प्रदान करने में असमर्थ कहा जायेगा। विचार करने पर ज्ञात होता है कि ऐसा किंचित नहीं है, ईश्वर सृष्टि की आदि में चार वेदों के रूप में आदि चार ऋषियों को ज्ञान देता है, यह प्रत्यक्ष भी है और तर्काश्रित भी है। विचार, चिन्तन, मनन, युक्ति व तर्क से भी यही परिणाम निकलता है कि वेद अर्थात् वेदों में निहित ज्ञान का आदि मूल परमेश्वर है जिसका कारण वेदों का ज्ञान तो सृष्टि में सत्य-सत्य दिखाई दे रहा है साथ ही वेदों की भाषा सर्वोत्कृष्ट है जिसके समान संसार की कोई भाषा नहीं है। महर्षि दयानन्द वेदों की आनुपूर्वी अर्थात् वेद के अक्षरों, शब्दों के क्रम, उनके अर्थ व सम्बन्धों को भी नित्य अर्थात् सर्वत्र, सदा, सर्वदा, इस कल्प, पूर्व कल्पों, आगे के कल्पों या भविष्य में उत्पन्न होने वाली सभी सृष्टियों की उत्पत्ति व रचनाओं में भी हर प्रकार से एक समान मानते हैं। उनके पास इसका एक सशक्त प्रमाण यह है कि ईश्वर पूर्ण ज्ञानी अथवा सर्वज्ञ है। उसका ज्ञान हमेशा एक जैसा रहता है, वह कम या अधिक नहीं होता। अतः उसका ज्ञान पहले भी ऐसा था, अब भी है और आगे भी ऐसा ही रहेगा। उसमें वृद्धि व क्षय की किंचित भी सम्भावना नहीं है। संसार में वेद से प्राचीन अन्य कोई पुस्तक नहीं है। हमारे दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति आदि जितने भी ग्रन्थ हैं, इनका मूल व मुख्य आधार भी चार वेद, ऋग्, यजु, साम व अथर्व वेद हैं। आर्यों ने सृष्टि की उत्पत्ति के पहले ही दिन से काल गणना करना आरम्भ कर दिया था जिसके अनुसार वर्तमान में सृष्टि व वेद सम्बत् का 1,96,08,53,115 हवां वर्ष चल रहा है। अब से लगभग 5000 वर्ष पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। इसके बाद ज्ञान के क्षेत्र में अन्धकार का युग आरम्भ हुआ जो समय व्यतीत होने के साथ तीव्र से तीव्रतर और तीव्रतर से तीव्रतम होता गया।

मनमोहन कुमार आर्य

महाभारत के बाद वेदों का पढ़ना-पढाना कम होता गया। कालान्तर में अज्ञान की यह स्थिति हुई कि लोगों ने वैदिक साहित्य को भुलाकर 18 पुराणों की रचना कर डाली और इसके अनुसार जीवनयापन को ही धर्म व कर्तव्य की संज्ञा दी गई। वेदों के लिए जो पुराण शब्दों का प्रयोग वैदिक ग्रन्थों में किया गया है उसे यह मन्दबुद्धि पूर्वज वेदों के स्थान पर पुराणों पर घटाने लगे। ऐसी स्थिति में वेदों का प्रयोग क्षेत्र सीमित हो गया और वेदों को यथार्थ रूप में जानने व समझने में बहुत कम अध्येताओं का पहुंचना हो पाता था। महर्षि दयानन्द के समय सन् 1824-1883 में वेद व अन्य वैदिक ग्रन्थ यद्यपि विद्यमान थे परन्तु वह अध्येताओं की पहुंच में नहीं थे। बीच में सायण और कुछ वेदभाष्यकार हुए जिन्होंने यह माना कि वेदों का आशय केवल यज्ञों व अग्निहोत्रों को करने-कराने में ही है। इसमें उन्होंने अपने समकालीन व उससे पूर्व के सभी प्रकार के अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं कुरीतियां सम्बन्धी मान्यताओं का प्रक्षेप व विधान किया। वेदों के मन्त्रों को न समझकर भ्रमवश यज्ञों में पशु हिंसा का प्रयोग किया जाने लगा जिसके विरुद्ध बौद्ध मत के प्रवर्तक भगवान बुद्ध व जैनमत के प्रवर्तक स्वामी महावीर ने शंखनाद किया। इस कारण से वेद तिरस्कृत हो गये और इनका पठन-पाठन धीरे-धीरे बन्द हो गया। इसके बाद स्वामी शंकराचार्य का आविर्भाव हुआ जिन्होंने इन नास्तिक मतों का पराभव किया। इस प्रकार समय व्यतीत होते-होते सन् 1857 का वर्ष आ गया जब हमारा अखण्ड देश अंग्रेजों का गुलाम था। सौभाग्य से मथुरा में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती एक संस्कृत पाठशाला चलाते थे। अक्तूबर- नवम्बर, सन् 1860 में उनके चरणों में पहुंच कर स्वामी दयानन्द ने उनसे संस्कृत के आर्ष व्याकरण का अध्ययन किया और अपने योग आदि के अभ्यास व अनुभवों तथा गुरुजी के पारगामी ज्ञान के कारण वह वेदों के यथार्थ स्वरूप, आशय व अर्थों को जान सके। गुरुजी ने आर्ष ज्ञान व अनार्ष ज्ञान की कसौटी स्वामी दयानन्द को बताई और यह भी प्रमाण पुरस्सर सिद्ध किया कि मूर्तिपूजा, गंगा स्नान, मृतकों का श्राद्ध, फलित ज्योतिष, जन्म पर आधारित जांति-पांति व्यवस्था, स्त्री व अशिक्षित-शूद्रों का वेदों के अध्ययन में अनाधिकार, बेमेल विवाह, सतीप्रथा आदि सब पाखण्ड हैं। इन व ऐसे पाखण्डों का धर्म, वेद व आर्ष साहित्य से कोई लेना देना नहीं है। यह प्रथायें मिथ्या ज्ञान के कारण स्थापित व आरम्भ हुई हैं जिन्हें वेदों के ज्ञान के प्रचार व प्रसार के द्वारा समाप्त किया जा सकता है और किया जाना चाहिये। भारत की पराधीनता का कारण भी वेद ज्ञान का तिरस्कार व उसका विलुप्त होना ही रहा है। अन्य कारणों में पुराणों के आधार पर धार्मिक अन्धविश्वासों का जीवन व व्यवहार में होना है। स्वामी दयानन्द का अध्ययन पूरा हुआ और दक्षिणा का समय आया। गुरुजी ने स्वामी जी को अपना जीवन वेदों के ज्ञान का प्रचार-प्रसार व अनार्ष ग्रन्थ पुराणों के प्रचार से उत्पन्न अज्ञान-जनित अन्ध-परम्पराओं को मिटाने में लगाने के लिए समर्पित करने की इच्छा, आग्रह व आज्ञा के रूप में निवेदन किया। स्वामीजी ने गुरुजी की आज्ञा स्वीकार कर उन्हें उनकी आज्ञा व इच्छा के पालन करने का वचन दिया और अपने मिशन को पूरा करने के लिए अप्रैल-मई, 1863 में गुरु से विदा लेकर आगरा की ओर निकल पड़े।

अज्ञान, अविद्या, धार्मिक अन्धविश्वास, कुरीतियां, सभी प्रकार की मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, ईश्वर के अवतार की अज्ञानपूर्ण मान्यता, नदियों में स्नान कर पुण्य मानना, अमरनाथ, अयोध्या, द्वारिका, अनेक माताओं के नाम से विख्यात मन्दिर आदि को तीर्थ मानना और वहां कि यात्रा को पुण्य कार्यों में रखना व इनसे अपने मनोरथों की पूर्ति आदि की मान्यताओं का खण्डन व सत्य का प्रकाश व मण्डन करना उनका उद्देश्य बन गया था। हिन्दुओं की परम आस्था सृष्टि के आरम्भ काल से वेदों में रही है और आज भी है। वेदों के ईश्वर रचित होने पर किसी भी हिन्दू व आर्य को आपत्ति नहीं है। यह दोनों को एक सूत्र में जोड़ता है। इसका प्रयोग कर स्वामीजी ने मूर्तिपूजा का खण्डन करना आरम्भ किया और इसके स्थान पर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, दयालु, अनादि, अजन्मा, अनन्त, अमर, अविनाशी, अजर, अभय, नित्य व पवित्र स्वरूप वाले ईश्वर की योग साधना विधि से स्तुति, प्रार्थना व उपासना का विधान किया। आपका प्रथम ग्रन्थ ईश्वरोपासना पर ही था जिसे आदि सन्ध्या कहा जाता है। इस ग्रन्थ को स्वामी दयानन्द ने आगरा प्रवास में लिखा था। मूर्तिपूजा का खण्डन यद्यपि युक्तियों व तर्क आदि के द्वारा भी हो जाता है परन्तु पौराणिक जनता को इनसे सन्तुष्ट कराना सम्भव नहीं था। अतः महर्षि दयानन्द ने वेदों को आधार बनाकर अक्तूबर-नवम्बर, 1869 में घोषणा की ईश्वर रचित वेदों में मूर्तिपूजा का कहीं विधान नहीं है, अतः मूर्तिपूजा करना अकर्तव्य है। अब ऐसी घोषणा करने पर यह सम्भव था कि कोई भी विरोधी उनसे पूछ सकता था कि आप वेद दिखाइये और बताइये कि वेदों में ईश्वरोपासना के लिए ईश्वर ने क्या विधान किया है। अतः यह सिद्ध होता है कि महर्षि के पास वेद अवश्य थे तभी उन्होंने वेदों से मूर्तिपूजा का विधान सिद्ध करने की चुनौती दी थी। यह भी अनुमान होता है कि उन्होंने अपने अध्ययन काल में गुरु विरजानन्द जी के पास वेद देखे, सुने व पढ़े थे। यही कारण था कि उन्होंने यह अभूतपूर्व घोषणा की और अपने वचन को सत्यापित करने के लिए उन्होंने विरोधी व इच्छुक विद्वानों को वेद अवश्य दिखाये होंगे। हमारा यहां यह कहने का अर्थ है कि यदि महर्षि के पास वेद न होते तो वह मूर्तिपूजा को वेद विरुद्ध कहने का साहस नहीं कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में हम महर्षि दयानन्द के पं. लेखराम रचित जीवन चरित से दो उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। पहला उदाहरण सन् 1864 का है जिसे "वेदों की खोज में धौलपुर की ओर प्रस्थान" शीर्षक दिया गया हैं। इस उदाहरण में कहा गया है कि "एक दिन स्वामी जी ने पंडित सुन्दरलाल जी से कहा कि कहीं से वेद की पुस्तक लानी चाहिए। सुन्दरलाल जी बड़ी-खोज करने के पश्चात् पंडित चेतोलाल जी और कालिदास जी से कुछ पन्ने वेद के लाये। स्वामीजी ने उन पन्नों को देखकर कहा कि यह थोड़े हैं, इनसे कुछ काम न निकलेगा। हम बाहर जाकर कहीं से मांग लावेंगे। आगरा में ठहरने की अवस्था में स्वामीजी समय-समय पर पत्र द्वारा अथवा स्वयं मिलकर विरजानन्द जी से अपने सन्देह निवृत कर लिया करते थे।" इस विवरण से यह ज्ञात होता है कि उन दिनों सम्भवतः स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी के पास व देश में अन्यत्र अनेक स्थानों पर वेद उपलब्ध थे। इसीलिए उन्होंने कहा कि हम बाहर जाकर कहीं से मांग लावेंगे। हम यहां इतना और कहना चाहते थे कि घर छोड़ने से लेकर स्वामी विरजानन्द जी के पास पहुंचने तक स्वामी दयानन्द जी ने सत्य व ज्ञान की खोज करते हुए देश भर के पुस्तकालयों व संग्रहालयों को छाना था। वहां उन्हें यत्र-तत्र व कहीं न कहीं वेद अवश्य देखने को मिले होंगे। अतः विरजानन्द जी के यहां अध्ययन करने पर उन्हें पता रहा होगा कि कहां कहां वेद मन्त्र सहितायें उपलब्ध हैं। हम अनुमान से यह भी कहना चाहते है कि महाभारत के बाद भारत में वेद मन्त्र संहिताओं का प्रकाशन स्वामी दयनन्द व उनके अनुयायी आर्य समाज ने ही किया और आज भी कर रहा है।

क्रमशः अगले अंक में....

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

उपासना व नाड़ियों में ध्यान

-: मन्त्र :-

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्याभरत्॥ (यजु० 11/4)

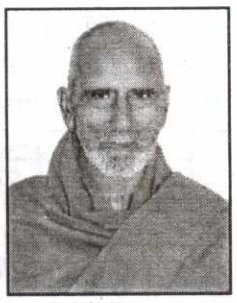

अर्थ—(युञ्जानः) योग को करने वाले मनुष्य (तत्त्वाय) तत्त्व अर्थात् ब्रह्मज्ञान के लिये (प्रथमं मनः) सर्वप्रथम अपने मन को परमेश्वर में युक्त करते हैं। तब (सविता) परमेश्वर उनकी (धियम्) बुद्धि को अपनी कृपा से अपने में युक्त कर लेता है (अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य) फिर वे परमेश्वर के प्रकाश को निश्चय करके (अध्याभरत्) यथावत् धारण करते हैं। (पृथिव्याः) संसार में योगी का यही प्रसिद्ध लक्षण है।

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोकऽएतु पथ्येव सूरेः।
शृण्वन्तु विश्वेऽअमृतस्य पुत्राऽआ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः॥
(यजु० 11/5)

अर्थ—उपासना का उपदेश देने वाले और ग्रहण करने वाले, दोनों के प्रति परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि जब तुम (पूर्व्यम् ब्रह्म) सनातन ब्रह्म की (नमोभिः) सत्य प्रेम-भाव से अपने आत्मा को स्थिर करके नमस्कारादि रीति से उपासना करोगे तब मैं तुमको आशीर्वाद देऊँगा कि (श्लोकः) सत्य कीर्ति (वाम्) तुम दोनों को (एतु) प्राप्त हो। किसके समान? (पथ्येव सूरेः) जैसे परम विद्वान् को धर्म योग यथावत् प्राप्त होता है इसी प्रकार तुमको सत्य सेवा से सत्य कीर्ति प्राप्त हो। फिर भी मैं सबको उपदेश करता हूँ कि (अमृतस्य पुत्राः) हे मोक्ष मार्ग के पालन करने वाले मनुष्यो! (शृण्वन्तु विश्वे) तुम सब लोग सुनो कि (आ ये धामानि दिव्यानि) जो दिव्य लोकों अर्थात् मोक्षसुख को (आतस्थुः) पूर्व प्राप्त हो चुके हैं उसी उपासना योग से तुम लोग भी उन सुखों को प्राप्त हो, इसमें सन्देह मत करो। इसीलिये (युजे) मैं तुमको उपासना योग में युक्त करता हूँ।

(साभार-वेदस्वाध्याय)

—आचार्य बलदेव

वैदिक सत्संग सभा का आयोजन

हिसार। दयानन्द ब्राह्म महा-विद्यालय हिसार में 14.9.2014 को वैदिक सत्संग सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता श्रीमती शन्नोदेवी ठकराल प्रधाना स्त्री आर्यसमाज ने की। मंच संचालन श्री प्रीतमराजपाल मन्त्री वैदिक सत्संग सभा ने किया। श्री स्वामी माधवानन्द जी ने आशीर्वाद दिया तथा आत्मा-परमात्मा पर विचार रखे। विद्यालय के छात्रों ने ईश्वरभक्ति के भजन रखे।

वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने वैदिक शिक्षा का महत्त्व तथा स्वामी दयानन्द जी के जीवन व कार्य के प्रेरणादायक संस्मरण सुनाए। श्री रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल ने गायत्री मन्त्र की सरल शब्दों में व्याख्या की तथा सत्संग के लाभ बताये तथा श्री रमेश गांधी ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, माता जनक बत्रा, प्रमोद लाम्बा, अजय बत्रा आदि उपस्थित थे। भोजन की व्यवस्था श्री सुरेन्द्र रावल की ओर से थी।

—कैलाशचन्द्र शास्त्री, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

अपील

जिस प्रकार शुद्ध घी अग्नि का सम्पर्क पाकर वातावरण को शुद्ध तथा सुसंगठित करता है ठीक उसी प्रकार '**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक द्वारा पाखण्ड, अंधविश्वास एवं आध्यात्मिक अज्ञानता को दूर करने हेतु किए जा रहे परोपकारी ज्ञानयज्ञ की ज्ञानाग्नि में तन-मन-धन से सहयोग देकर आप भी पुण्य एवं यश के भागी बनें। ध्यान दें कि आपके आस-पास आपके स्नेहीजन कौन-कौन से ऐसे महानुभाव हैं जो विचारशील, स्वाध्यायप्रेमी तो हैं किन्तु आर्य वैचारिक क्रान्ति अथवा वैदिकधर्म एवं सिद्धान्तों से दूर हैं ऐसे महानुभावों को कम से कम एक वर्ष के लिए '**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक से जोड़ने का छोटा-सा किन्तु अहम् प्रयास आप भी कर सकते हैं।

—सम्पादक

दलितों के मसीहा हरियाणा के संत

अभी दलितों के उत्थान में अपना जीवन समर्पित करने वाले दलित नेता केरल के अय्यंकली की 152वीं वर्षगांठ मनाई गई थी। अय्यंकली ने अछूतों-दलितों को समाज में उनका हक दिलाने के लिए अनेक कष्ट सहे लेकिन पीछे मुड़कर नहीं देखा यहां तक कि एक बार केरल की सरकार ने सभा करने के लिए मैदान के लिये प्रार्थना-पत्र दिया तो सरकार ने एक इंच भूमि देने के लिये भी मना कर दिया लेकिन कर्मठ अय्यंकली ने हार नहीं मानी तथा समुद्र के तट पर गये तथा नौकाओं द्वारा मैदान निर्मित मैदान में भारी जनसमूह को संबोधित किया। महात्मा गांधी भी उनसे मिलने स्वयं गये तथा उनके कार्यों की प्रशंसा की।

भक्त फूलसिंह

इसी प्रकार दलित नेता संविधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर ने भी दलितों-पिछड़ों के लिये अनेक कष्ट सहे तथा उनके उत्थान में अगणित कार्य किये।

ये दोनों महान् आत्मा दलित थे दलितों के लिये कार्य करते-करते बलिदान हो गये, लेकिन इसी कड़ी में एक संत हरियाणा के भी थे भक्त फूलसिंह, जो एक साधारण किसान परिवार में पले-बढ़े अनेक कष्टों का सामना करते हुए पटवारी बने। उन्हीं दिनों से दीन-दुखियों के कष्ट निवारण में जुट गये। ठेठ देहाती इलाके में दो संस्थाओं की स्थापना की। नगरों-शहरों से दूर जहां कोई चिट्ठी पढ़ने वाला भी नहीं मिलता था। संस्थाओं की स्थापना उनका प्रबन्ध करना लोहे के चने चबाने जैसा था। इसके साथ-साथ इलाके में दीन-दुखियों के कष्टों में मदद करके उनका विश्वास प्राप्त करना भी अपना कर्त्तव्य मानते थे। एक बार की घटना ने तो उनको अग्नि परीक्षा में भी कूदना पड़ा। एक बार गोरक्षा सम्मेलन में भाग लेने हरयाणा के भापड़ौदा गाँव में बिडला जी आये थे और उनके सामने अपनी पीड़ा सुनाने मोंठ (हिसार) से चार-पांच हरिजन भाई आये तो बिड़ला जी ने कहा था भाई तुम्हारे कष्टों को तो भक्त फूलसिंह दूर कर सकते हैं।

भक्त जी ने मोठ गांव पहुँचकर हरिजनों के लिए कुंआ निर्माण की बात की तो विरोधी धर्मान्ध लोगों ने हरिजनों का बाबा समझकर मार-पीटकर मरा समझकर जंगल में डाल आये, उस रात उस जंगल से गुजरते हुए दो लोगों ने उनको सहारा दिया तथा नारनौंद गाँव पहुँचाया। इसी गाँव में भक्त जी ने भीष्म प्रतिज्ञा कर डाली आमरण अनशन 23 दिन चला। वियोगी हरि जी के आग्रह पर गांधी जी के आदेश पर दीनबन्धु चौधरी सर छोटूराम जी ने आदेश दिया कि या तो कुंआ दो दिन में तैयार हो या गाँव को उजाड़ने के आदेशों की पालना की जाए। कुंआ बना, अनशन टूटा। यह महात्मा न हरिजन के न दलित थे लेकिन आम जनता-दीन-दुखियों के लिये सर्वस्व बलिदान करने को तैयार रहते थे।

महात्मा भक्त फूलसिंह भारत के ही नहीं अपितु विश्व के शायद प्रथम पुरुष थे जिन्होंने पटवार काल में ली हुई रिश्वत वापिस की थी। अपनी जमीन जायदाद बेचकर प्रायश्चित्त किया था तथा दीन-दुखियों की सेवा में अपना जीवन लगा दिया। महात्मा गांधी इनके पास तो नहीं आये लेकिन वियोगी हरि जी के माध्यम से इनको अपने पास बुलाया और बोले भक्त जी मेरे लिये इतना लंबा उपवास संभव नहीं हुआ न इतना सामर्थ्य था। आप मेरे साथ रहें तो आपकी भारत के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में गिनती हो जायेगी लेकिन भक्त जी ने बड़ी नम्रता से इंकार करते हुए कहा महात्मा जी, मैं प्रतिष्ठा नहीं चाहता मैं तो गरीबों की सेवा में ही अपना समय लगा पाऊँ यही मेरी इच्छा है। आपने देखा हरयाणा के संत के दृष्टिकोण को। आज उनके द्वारा स्थापित गुरुकुलों के स्थान पर एक ठेठ देहात में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हो चुकी है जो उनकी तपस्या का ही फल है।

-दिनेश शास्त्री, 1943, सै०-23, सोनीपत 9812411717

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 08901387993 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

thearyasamaj.org

गुरु-शिष्य का पारम्परिक सम्बन्ध

❑ आचार्य वेदमित्र, पातञ्जल योगाश्रम, भऊ आर्यपुर, रोहतक 9355675408

गतांक से आगे...:

गुरु स्वामी विरजानन्द जी महाराज ने बालक मूलशंकर से कहा था कि जो कुछ अभी तक पढ़ा है, उसे यमुना में बहा आओ। पुराने मकान को तोड़े बगैर नूतन भवन का निर्माण संभव नहीं है। अत: आचार्य जब शिष्य की पुरानी आदतों को तोड़ता है तो इतनी पीड़ा होती है, वह साक्षात् यमराज ही नजर आने लगता है, लेकिन गुरु केवल इसी अवस्था में बना रहे तो भी शिष्य भाग जायेंगे। इसीलिए गुरु का दूसरा रूप होता है वरुण अर्थात् वरण करने योग्य। इस अवस्था में गुरु-शिष्य हृदय की गहराइयों से एक-दूसरे का वरण कर लेते हैं। चुन लेते हैं चूंकि शिष्य अग्निपरीक्षा पास करके मौत के युद्ध गुजर कर आया है। इसलिए नया सृजन वह बड़ी सौम्यता से करता है। वैसे भी जब पुराने अभ्यास टूट जाते हैं और तपस्यजन्य साधना के अभ्यास सहज होने लगते हैं तो गुरु सोम जैसे मालूम पड़ता है। फिर क्रमश: साधना-तपस्या करते-करते जब सात्विकता के संस्कार प्रबल हो जाते हैं, फिर भी कभी-कभी बीच में पुराने अनृत संस्कार यदि आकर बाधा डालते हैं तो शिष्य गुरु के पास उस कठिनाई का निवेदन करता है। तब गुरु उसके लिए एक औषधि के समान शोधक बन जाता है।

आचार्य वेदमित्र जी

एक बार स्वामी दयानन्द पुराने पाठ के दोहराने के निवेदन पर गुरु विरजानन्द की ताड़ना से कई घण्टे ध्यान के बल पर पाठ का पुन: स्मरण कर पाये थे। इससे गुरु ने दयानन्द के अन्त:करण को जगाकर उसका कल्याण कर दिया। कठोर पुरुषार्थ तथा तप से समस्त ज्ञान-विज्ञान का पान, दुग्ध के समान लगता है। मस्तिष्क में परम प्रकाश के उद्भव पर ही बालक महामेधावी बन जाता है। अब वह परमात्मा लोक को भी पहुंच जाता है। वेद में कहा भी है—**दिवो नाकस्य पृष्ठात्स्वर्ज्योतिरगाम।**

वेदों में आचार्य के अन्य नाम भी है। यानि दाज। जो सार को रखकर थोथे पदार्थ को उड़ा देता है। शिष्य के जन्म-जन्म के क्रोध, द्वेष, काम आदि को छुड़ा देता है। आचार्य को वेद में अग्नि नाम से भी पुकारा गया है। अग्नि का अर्थ होता है अग्रणी अर्थात् आगे ले जाने वाला। आचार्य अपने शिष्य को सदा आगे ले जाने वाला होता है और अग्नि उसे अपने स्वरूप जैसा भी बना देती है दीप्यमान। तेज से वह रूपलावण्य वाला होता है। वेद में वर्णन है—**स स्नातो बभ्रु: पिंगलपृथिव्या बहु रोचते।** अथर्व० 11.24.16

संसारी दृष्टि में शिष्य की तुलना विद्यार्थी से करते हैं। वस्तुत: विद्यार्थी वह होता है जो कुछ ज्ञान पाता है। लेकिन शिष्य वही होताहै जो ज्ञान को प्रभु का मानता है और वह संसार को अपना समझ कर सेवा करता है यानि उसको लोक का प्रत्येक प्राणी अपना लगता है। उनके कार्य भी उसे अपने कार्य लगते हैं। उस परम परोपकारी शिष्य को पाकर आचार्य को जो आह्लाद मिलता है वह अवर्णनीय होता है यथा वेद में कहा है—**स दाधार पृथिवीं दिवं च स आचार्यं तपसा पिपर्ति।** उसका देवता भी दर्शन करना चाहते हैं। **अनेकानि सहस्राणि कुमारब्रह्मचारिणाम।** पृथ्वी पर हजारों ऐसे ब्रह्मचारी ही नहीं अनेक शाण्डिल्य महाशयों की पुत्री जैसी ब्रह्मचारिणी भी हुई हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गुरु में वह सामर्थ्य होता है जो मानव को महामानव और एक साधारण पुरुष को महापुरुष बना सकता है। परन्तु इसके लिए पात्र तो बनना पड़ता है। सारे ज्ञान, सारे आशीर्वाद व सारी कृपाएं पात्र को ही मिलती हैं। **अभ्यादद्यामि समिधमग्ने व्रतपते त्वयि। व्रतं च श्रद्धां च उपैमि इन्धे त्वा दीक्षित: अहम्।** वेद भगवान् शिष्य को समिधा की तरह अग्नि में पूर्ण स्वाहा होने की यानि पूर्ण समर्पण की बात कह रहे हैं। प्रचण्ड अग्नि में सोना पड़ने पर कुंदन बन जाता है। अब यह ब्रह्मचारी पूर्ण विद्वान् बनकर चाहे गृहस्थ अपनाये, अधिकारी बने, मन्त्री बने, राजा बने, चाहे राष्ट्रप्रहरी बने, यह सोने की चमक में विधर्मी कर्म नहीं करेगा। चाहे अश्वपति हो, राम हो, कृष्ण हो, दयानन्द हो, इनको किसी आचार्य ने ही तरासा था। ऐसों को देखने के लिए जगत् लालायित है। आशान्वित हैं कि कहीं गुरुकुल का कोई ब्रह्मचारी राम बन जावे, कृष्ण बन जावे, दयानन्द बन जावे। धरती पर पुन: ऋषि व्यवस्था स्थापित हो जावे। आओ उस ब्रह्मचारी को अपने अन्दर देखें। अपने अन्दर वाला सबसे नजदीक है। उसके सब ज्ञान व कर्म को अपने अन्त:करण में शत-प्रतिशत देख सकेंगे। वेदभगवान् यही कह रहे हैं—**यज्ञस्य चक्षु: प्रभृति मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।** अनृत से मुंह मोड़े, वेदवाणी को ही श्रवण करे, वेदवाणी से अन्य न बोले। आचार्य अपने शिष्य को निम्न कार्यों से जोड़ देता है, जब उसका उपनयन संस्कार करता है।

प्रजापतये त्वा परिददामि। यानि यज्ञ से विश्व का कल्याण होता है तो यज्ञ से जोड़ता है। इसी प्रकार अन्न व औषध के संवर्धन करने, विश्वकल्याणी पृथ्वी पर विविध दिव्य कर्म, सूर्य-चन्द्रादि की ऊर्जा को प्राप्त कर सभी जीव जगत् का उपकार करने के व्रत से बांध देता है। 6-7 वर्ष के बालक के अन्दर छुपी अनन्त प्रतिभाओं को जगाने का कार्य आचार्य का ही है। संसार के परम सर्वोत्तम सम्बन्ध से वेदज्ञान की धारा संसार में गुरु-शिष्य द्वारा बह रही है। इसी धारा के कारण आज भी भारत में एक-विवाह प्रथा, भाई-बहन का पवित्र सम्बन्ध, ईश्वर निष्ठा, गोपालन आदि तथा शाकाहार जैसे धर्म कार्य हो रहे हैं। **आयुर्यज्ञेन कल्पताम्।** धन्य हैं वे जो आयु क अन्त तक प्रभु पुत्र बनकर परोपकारमय जीवन जीते हैं।

कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड गौरव' सम्मान

सामाजिक एवं औद्योगिक संस्था **'देव विमल हर्बल हैरिटेज एण्ड एजुकेशनल सोसायटी'** देहरादून की ओर से एक भव्य अलंकरण समारोह में दिनाक 14 सितम्बर, 2014 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को **'उत्तराखण्ड गौरव'** के सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ. सुरेन्द्र कुमार को यह सम्मान वैदिक शिक्षा, संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य के लेखन एवं प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने के फलस्वरूप दिया गया। यह भव्य अलंकरण समारोह हिमालयन पब्लिक स्कूल, देहरादून में सम्पन्न हुआ जिसमें अध्यक्ष के रूप में हिमालयन ड्रग्स के अध्यक्ष एवं उद्योगपति डॉ. एस. फारूख, मुख्य अतिथि ले.जन., एच.बी.काला, विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. के. जैन कुलपति दून विश्वविद्यालय, सोसायटी के अध्यक्ष श्री हर्षवर्धन आर्य एवं सचिव डॉ. आदित्य आर्य उपस्थित थे इन्होंने कुलपति जी को स्मृतिचिह्न, अभिनन्दन-पत्र आदि देकर सम्मानित किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के शिक्षक, शिक्षकेत्तर एवं विद्यार्थी वर्ग ने इस सम्मान को पाने पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष में उत्तराखण्ड की ओर से डॉ. सुरेन्द्र कुमार को यह दूसरा सम्मान प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व इन्हें 'ऑल इंडिया कांफ्रेंस ऑफ इटंलेक्च्वल सोसायटी, दिल्ली' की ओर से **'उत्तराखण्ड रत्न'** अलंकरण से सम्मानित किया गया था।

-डॉ. प्रदीप जोशी, जनसूचना अधिकारी, गु.कां.वि.वि., हरिद्वार

पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

हरिद्वार। 'अपने कार्यों के लिए प्रयुक्त होने वाले विभिन्न स्रोतों को कैसे प्रबंधित किया जाए यह आप देख सकते हैं पोस्टर के माध्यम से।' गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में 19 सितंबर 2014 को एक पोस्टर प्रतियोगिता होगी जिसका विषय होगा **'मैनेजिंग योर रिसोर्सेस'**। प्रबंधन संकाय के डीन डा. वी.के. सिंह ने बताया कि प्रबंधन संकाय विश्वविद्यालय में यह तीसरी प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है। जिला स्तर पर होने वाली इस प्रतियोगिता में विभिन्न संस्थानों के छात्र हिस्सा ले सकते हैं। डा. सिंह ने कहा कि समाज में जागरुकता पैदा करने के लिए विभिन्न आयामों का प्रयोग होता है जिसमें पोस्टर प्रतियोगिता बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु विभागीय प्राध्यापक डा. कमल पंत तथा संचित डागर से संपर्क किया जा सकता है।

-डॉ. प्रदीप जोशी, जनसूचना अधिकारी, गु.कां.वि.वि., हरिद्वार

thearyasamaj.org

योग विद्या के सामने विज्ञान कुछ भी नहीं

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

आज विज्ञान का युग है। मानव ने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए जीवन के हर पहलू को विज्ञान से जोड़ लिया है। हजारों मील दूर बैठे किसी भी परिचित से लेपटाप या मोबाइल फोन पर साक्षात् वार्ता कर सकता है। प्रकृति के अछूते दृश्य, अनेक जीव-जन्तु, विनाशकारी तूफान एवं भूकम्प के भयावह दृश्य हम टेलीविजन पर घर बैठे देख सकते हैं। भयंकर प्राणघातक रोगों की शल्य चिकित्सा की उपलब्धि, कृषि एवं औषध विज्ञान के नवीनतम अनुसंधान, परखनली द्वारा मानव भ्रूण उत्पत्ति, क्लोन द्वारा पशुओं की नस्ल सुधार विधि, जल-थल और वायु में आवागमन के तीव्रतम सुविधा जनक संसाधन निर्माण एवं महामारी रोगों का समूल नाश करने जैसे साधन निर्मित कर लिये हैं। परन्तु ये सब उपलब्धियां प्रकृति (ईश्वरीय ज्ञान) ज्ञान का एक ही प्रतिशत भी नहीं है। एक योगी द्वारा हजारों मील दूर से किसी के मन के भावों को समझना, हवा में चलना, पानी पर भागना, जहां चाहे वहां पल भर में पहुंच जाना अकस्मात् होने वाली प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान एवं पूर्वाभास होना, यहां तक कि जीर्ण क्षीण शरीर को पुनः कंचन काया बना लेना, अपनी आयु को बढ़ा लेना आदि विषय विज्ञान से बाहर की विद्या है। विज्ञान के पास इन सब को जानने समझने के लिए आज तक कोई साधन या उपाय नहीं है। योगविद्या का पारावार पाना विज्ञान के बस की बात नहीं।

रोबिन शर्मा (सोफ्टवेयर इंजीनियर) द्वारा लिखित पुस्तक 'द मोंक हू सोलड हिज फरारी' आज विश्वभर में लाखों पाठकों द्वारा पढ़ी जा रही है। रोबिन शर्मा ने इस पुस्तक में लिखा है कि किस प्रकार एक वृद्ध कृशकाय **जूलियन मैन्टसे** नामक वकील बहस करते समय कोर्ट रूप में ही हृदयाघात से गिर जाता है। चिकित्सकों द्वारा किसी तरह उसे बचा लिया जाता है। किसी योगी के बताने पर वह अपनी समस्त धन-सम्पत्ति सुख-सुविधाओं को त्याग कर हिमालय पर्वत पर चला जाता है। वहां वह प्राणों की बाजी लगाकर बड़ी कठिनाई से **सेसिज ऑफ सिवाना** स्थान पर **योगी रमन** से मिलता है। वहां उसे जीवन के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त होता है। वहाँ रहने वाले सभी युवा हैं, चेहरों पर लाली एवं चमक है, बाल सबके काले हैं, जीवन उत्साह से भरपूर है। योगी रमन ने इस वकील को योग का रहस्य समझाया। वहां रहकर वह 65, 70 वर्ष का कृशकाय **जूलियन मैन्टसे** बीस वर्ष का युवा बन जाता है।

देशराज आर्य

अनेक ग्रन्थों को पढ़ने से ऐसे प्रसंग मिलते हैं कि जिस किसी ने भी आध्यात्मिक ज्ञान व योगविद्या की चाहना की तो उन्होंने हिमालय पर्वत की हिमाच्छादित दुर्गम श्रृंगों व शिखरों पर कन्दराओं की शरण ली। वहां अनेक योगी एवं सिद्ध महान् आत्मायें निवास करती हैं जो चार-पांच सौ वर्षों से भी अधिक जीवित रहते हैं। महर्षि दयानन्द ने भी अपने यौवनकाल में उन हिम श्रृंखलाओं, कंदराओं की खोज की थी। उन्हें कुछ उच्च कोटि के योगी मिले भी थे जिनसे उन्होंने योगविद्या सीखी। महर्षि यदि स्वयं का ही उपकार चाहते तो वे भी उन योगियों के साथ उन कंदराओं में रहते। परन्तु उनका उद्देश्य तो इस संसार से अज्ञान और अन्धकार का नाश करना था। महर्षि ने योग सिखाने वाले योगियों का हृदय से आभार जताया कि उनकी कृपा से महर्षि का जीवन निहाल हो गया था। महान् योगी होने पर भी महर्षि ने कहीं भी स्वयं को योगी होने का जिकर नहीं किया। यद्यपि प्रसंगवश अनेक अवसरों पर उनके समीप रहने वालों को यदा-कदा महर्षि के महान् योगी होने के संकेत मिल गये थे। महाशय रामलाल को महर्षि ने एक बार बताया कि उनको कई बार विकट तथा विषम विष दिया गया है, ऐसे कालकूट विषों को कितना ही योग-क्रियाओं से वमन तथा वस्ति कर्म द्वारा निकाल दिया जाय परन्तु रक्त में मिश्रित हुआ हलाहल विष सारा नहीं निकलता। उसका प्रभाव कुछ न कुछ बना ही रहता है। यही कारण है कि मेरे स्वास्थ्य की आधार-शिला हिल गई है। यदि मुझ पर ऐसे भीषण विष प्रयोग न किये गये होते तो इस शरीर पर शिथिलता के चिह्न एक शताब्दी में तो कदापि दिखाई नहीं पड़ते। यह सब योग-विद्या का ही चमत्कार था।

श्री मोरार जी भाई देसाई (पूर्व प्रधानमंत्री) को श्रीरामचरितमानस कथा कहने का बड़ा अनुभव था। जेल में रहते हुए उन्होंने श्रीरामचरितमानस को कई बार पढ़ा था। गुजरात विद्यापीठ ने उनको कुलपतिश्री नियुक्त किया था तथा प्रतिवर्ष पदवी दान समारोह के निमित्त वे विद्यापीठ में एक सप्ताह के लिए रहने आते थे। इसी अवधि में श्री मोरारजी भाई देसाई ने प्रार्थना प्रवचन के निमित्त से श्रीरामचरितमानस पर प्रवचन किये थे। उन्होंने दिनांक 14.10.1977 को शाम 6 बजे अपने पहले प्रवचन में श्रीरामचरित कथा में ही प्रसंगवश कहा कि—'**सम्पूर्ण सृष्टि में जो ज्ञान है, उसकी तुलना में विज्ञान का ज्ञान एक प्रतिशत से अधिक नहीं। ईश्वर की साधना से ही सम्पूर्ण ज्ञान मिलता है और ईश्वर का ज्ञान मिल गया तो सृष्टि और विश्व का सब ज्ञान स्वतः मिल जायेगा।**' उन्होंने एक रोचक प्रसंग सुनाया—बिहार में एक साधु थे, जो पानी के ऊपर चल सकते थे, वे कोई भी चीज पैदा कर सकते थे, पर करते नहीं थे, अपने स्थान पर ही रहते थे। महाराष्ट्र में बिहार के एक सैक्रेटरी थे, जो मोरारजी के मित्र थे, वे न संत के शिष्य थे। वे एक बार अपने लड़के को लेकर उस साधु के पास गये। लड़के ने साधु से कहा—'जरा पानी में चलकर दिखाइये। यद्यपि पिता ने लड़के को ऐसा कहने पर मना किया। परन्तु साधु ने कहा क्या बात है? इसको क्या जानना है? आप इसे क्यों डाटते हैं? बच्चे तो निर्दोष होते हैं। बच्चे ने कहा पानी पर चलकर दिखाइये। योगी में इतनी शक्ति होती है कि वह अपने वजन को हल्का कर सकता है। फिर वह पानी के ऊपर चले या हवा में, कोई कठिनाई नहीं होती।' साधु ने लड़के से कहा—'जरा अपना हाथ सीधा कर। लड़के ने जब हाथ सीधा किया तो साधु उस पर चढ़ गये। लड़के को पता भी न चला, हाथ पर वजन भी नहीं लगा। यह देखकर उस आई.सी.एस. ने भी कहा, जरा मेरे हाथ पर भी चढ़िये। साधु ने उसके हाथ पर भी यह प्रयोग किया।' यदि हम इस शक्ति को प्राप्त कर सकें तो विज्ञान में क्या रखा है?

उन्होंने एक और प्रसंग सुनाया। एक कन्नड़ व्यक्ति ने मोरारजी को बताया कि वे वर्नाक्यूलर फाइनल की परीक्षा में फेल हो गये थे तथा कुएं में पड़कर आत्महत्या करने लगे थे। वहां एक साधु ने उसे कुएं में गिरने से बचा लिया। वह उनका शिष्य बन गया। उस साधु ने उसे एक दिन हिमालय पर चलने को कहा। उसके हां कहने पर साधु ने उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी और दो मिनट के बाद पट्टी खोली तो वह हिमालय पर था। कैसे पहुँचा जरा भी ख्याल नहीं था। वहां साधु ने उसे सब विद्याएं सिखाईं। एक दिन साधु ने फिर उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी और दो मिनट बाद खोली तो फिर अपने स्थान पर यहीं आ गया। यह एक विद्या है परन्तु आज हमें विश्वास ही नहीं होता।

भारत के एक वैज्ञानिक ने रूस के वैज्ञानिकों से चाँद पर पहुँचने की बात कही। वहां के वैज्ञानिक ने हमारे वैज्ञानिक से कहा कि चन्द्रमा पर पहुँचने में कौन-सी नई बात है? भारत के लोग तो दो मिनट में चन्द्रमा पर पहुँच जाते थे। विश्व आज भी भारत की योगविद्या का लोहा मानते हैं।

पत्रकार तीर्थसिंह आर्य का निधन

वरिष्ठ पत्रकार मा. तीर्थसिंह आर्य का दिनांक 23 सितम्बर 2014 मंगलवार को हृदयगति रुक जाने के कारण निधन हो गया वे 70 वर्ष के थे। वे अपने पीछे दो लड़के व दो लड़कियों सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके निधन पर सभी पत्रकार साथियों ने शोक प्रकट किया।

आर्य जी आर्यसमाज के प्रत्येक आन्दोलन व कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—मा. रामपाल आर्य, सभामन्त्री

thearyasamaj.org

दर्शन-दिग्दर्शन

गतांक से आगे....

अनेकत्र दर्शनशास्त्र के लिए आन्वीक्षिकी (विद्या) शब्द का भी प्रयोग हुआ है। अनु+ईक्षा से यह शब्द बनता है, जिस का भाव है—देखने के बाद देखना अर्थात् देखे, सुने के अनुरूप विचार करना। प्रथम जो हमारे सामने कारण या कार्य का रूप आता है, उसके आधार पर शेष का विचार करना। ऐसा ही अर्थ अनुमान का भी है, जो कि प्रमाणों में से दूसरा प्रमाण है। दर्शनशास्त्र में अधिकतम प्रत्यक्ष (और शब्द प्रमाण) के आधार पर ही विचार, मनन चलता है।

वैशेषिक-विषय बोध की दृष्टि से वैदिक दर्शनों में प्रथम वैशेषिक दर्शन आता है। जिसके कर्ता **कणाद** महर्षि हैं, इसको प्राचीन भौतिक शास्त्र भी कह सकते हैं। इसमें द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय नामक पदार्थों का वर्णन विश्लेषण है। इन भाव (सत्ता वाले) पदार्थों के आधार पर यहां अभाव का भी परिचय दिया गया है। इनमें से मुख्य-द्रव्य ही है, क्योंकि इस के आधार पर ही अन्यों की स्थिति तथा विवेचना सम्भव होती है। इस दर्शन में मन, आत्मा, विद्या, अविद्या, काल, दिशा, आदि का भी विवेचन है, यहाँ पर विशेष रूप से पृथिवी, जल अग्नि (=तेज), वायु, आकाश और इन पांचों के गुणों तथा कर्मों का विस्तार से वर्णन है। इन पांचों का सांझा नाम भूत है, यतोहि व्यावहारिक स्तर पर इनकी सत्ता (=भू) साधी जा सकती है। इन में से प्रथम तीन तो आंखों से स्पष्ट देखे जाते हैं, अत: कुछ अंश में यहां दर्शन का देखना अर्थ भी चरितार्थ हो जाता है। पांचों भूत और इनसे बनी हुई वस्तुएं ही विशेष रूप से हमारे व्यवहार में आती हैं। अत एव इन सब को विशेष कहते हैं और इसी से तद्धित में वैशेषिक शब्द बना है। सांख्य, योग-शास्त्र आदि में इन पांचों भूतों के लिए विशेष शब्द का प्रयोग मिलता है।

वैशेषिक दर्शन का प्रारम्भ-'**अथातो धर्मं व्याख्यास्याम:**' से होता है। यहां धर्म शब्द का अर्थ **स्वभाव** है, इस दर्शन में प्रयुक्त साधर्म्य, वैधर्म्य शब्दों से भी इसकी पुष्टि होती है। जैसे कि अग्नि का धर्म प्रकाश, जलाना आदि है। यहां धर्म शब्द स्वभाव का ही ज्ञापक है और आज के भौतिक शास्त्री भी ऊर्जा आदि गुणों, धर्मों के अन्वेषण में ही निरत हैं।

न्यायदर्शन-प्रमाणों (=जानने, समझने के साधन) से किसी बात का निर्णय या निर्णय की प्रक्रिया को **न्याय** कहते हैं। न्यायदर्शन में प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन आदि सोलह पदार्थों का वर्णन किया गया है। इस दर्शन में इन सोलह के तत्त्वज्ञान से नि:श्रेयस (=पूर्ण कल्याण, मोक्ष) की प्राप्ति मानी गई है और इस दृष्टि से वहां दूसरा सूत्र विशेष विवेचनीय है, अर्थात् तत्त्वज्ञान से जब मिथ्याज्ञान दूर होता है, तभी उसके कारण होने वाले दोष आदि हटते हैं, जिससे मोक्ष की सिद्धि होती है। इस सूत्र में यह बताया गया है कि इनके सही ज्ञान से किस प्रकार मोक्ष होता है।

प्रमाण-हम कुछ बातों का ज्ञान, निर्णय जहां प्रत्यक्ष प्रमाण से करते हैं, तो वहां कुछ का अनुमान से और कुछ बातों का पता शब्द (शास्त्र) से लगता है। ये प्रमाण किसी-किसी के ज्ञान, निर्णय में (कुछ) इकट्ठे और कहीं-कहीं अलग-अलग सहायक होते हैं। निर्णय में सहायक बनने वाले तर्क तथा अनुमान से अंगभूत पंचावयव भी कहीं-कहीं न्यायदर्शन के पर्याय रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

क्रमश: अगले अंक में....

—भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,
B-2, 92/7B, शालीमार नगर,
जिला होशियारपुर (पंजाब)

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (झज्जर)	26 सित० से 2 अक्तू० 2014
2.	वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति खानपुर कलां (सोनीपत)	2 से 8 अक्तूबर 2014
3.	गुरुकुल लाढौत जिला रोहतक	19 अक्तूबर 2014
4.	आर्यसमाज लोहाणा जिला रेवाड़ी	25 से 26 अक्तूबर 2014
5.	आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी	8 से 9 नवम्बर 2014
6.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	14 से 16 नवम्बर 2014
7.	आर्यसमाज बसई जिला गुड़गांव	14 से 16 नवम्बर 2014

—सभामन्त्री

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक नवां एवं दसवां परिचय सम्मेलन

अब तक 390 से अधिक विवाह संपन्न

कोटा, 22 सितम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रकाश आर्य व दिल्ली आर्य सभा के महामंत्री विनय आर्य ने बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्णय एवं निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नवां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आगामी 28 सितम्बर 2014 रविवार को प्रात: 10 बजे से आर्यसमाज महर्षि दयानन्द गंज इन्दौर (म.प्र.) एवं दसवां सम्मेलन 23 नवम्बर 2014 रविवार को प्रात: 10 बजे से आर्यसमाज आणंद (गुजरात)पर आयोजित किया जा रहा है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने बताया कि पूर्व में आयोजित आठ आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलनों के अच्छे परिणाम आए हैं। जानकारी मिली है कि आठों सम्मेलनों से अब तक लगभग 390 से अधिक रिश्ते हो चुके हैं। इसकी उपयोगिता को देखते हुए इस बार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निर्णय किया है कि यह युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन भारत के विभिन्न महानगरों में आयोजित किया जाये। इसी संदर्भ में इंदौर में यह दूसरा सम्मेलन होने जा रहा है।

राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने जा रहे इस नवें एवं दसवें आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन हेतु आर्य कार्यकर्ता आर्य परिवारों से संपर्क बना रहे हैं। आर्य परिवारों में आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के प्रति काफी उत्साह है तथा वे अपने विवाह योग्य बच्चों के रजिस्ट्रेशन करा रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि बायोडाटा फार्म भरकर साथ में पंजीयन शुल्क (एक सम्मेलन के दो सौ रुपये तथा दोनों सम्मेलन के लिए चार सौ रुपए) का ड्राफ्ट दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजकर रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। रजिस्ट्रेशन फार्म मो. नं. 09540040339 (श्री विजय आर्य) पर अपने डाक का पता भेजकर मंगा सकते हैं, अथवा हमारी वेबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड भी कर सकते हैं तथा ऑनलाइन भी फार्म भर सकते हैं। रजिस्ट्रेशन फार्म शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय में भिजवा देवें, जिससे आशार्थी का नाम परिचय विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके।

श्री विनय आर्य ने बताया कि सम्मेलन में भाग लेने बाहर से आये आर्य परिवारों के ठहरने, चाय-नाश्ते व दोपहर के भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रहेगी।

-अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक, मो. 09414187428

आर्य वैवाहिक सम्मेलन हेतु संयोजक नियुक्त

याज्ञिक हाड़ौती संभाग व पाण्डेय कोटा जिला संयोजक बनाए गए

(सम्मेलन 28 सितम्बर इंदौर में व 23 नवम्बर को आणंद (गुजरात) में)

कोटा, 23 सितम्बर। आर्यसमाज द्वारा आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन हेतु राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने कोटा संभाग में संयोजक नियुक्त किये हैं। चड्ढा ने बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अब तक हुए 8 परिचय सम्मेलनों के आशातीत परिणाम आए हैं। इसे देखते हुए निर्णय लिया गया कि 28 सितम्बर को आर्यसमाज महर्षि दयानन्दगंज इंदौर में व 23 नवम्बर को आणंद (गुजरात) में दसवां आर्य परिचय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। चड्ढा ने आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन हेतु रामप्रसाद याज्ञिक को हाड़ौती संभाग व अरविन्द पाण्डे को कोटा जिला का संयोजक नियुक्त किया है। इसके अतिरिक्त देवेन्द्र विजय को बांरा, अभवदेव शर्मा को बूंदी, नरदेव आर्य को रावतभाटा, मदनलाल गौड़ झालावाड़ का संयोजक बनाया गया है।

रामप्रसाद याज्ञिक

अरविन्द पाण्डेय

-अरविन्द पाण्डेय, प्रचार एवं कार्यालय सचिव मो. 09799498477

thearyasamaj.org

आर्यसमाज का हीरा नहीं रहा

आर्यसमाज भाण्डवा जिला भिवानी के मुख्य स्तम्भ, अथक प्रचारक, उत्साही और कर्मठ कार्यकर्त्ता आर्यसमाज के जागरूक प्रहरी, सेवाभावी, अति श्रद्धालु, धर्म संस्थाओं के रक्षक, निर्भय वक्ता, समर्पित समाजसेवी, सज्जनों के सहायक, दुष्टों को फटकार लगाने वाले, आर्यों की शान, आर्यसमाज भाण्डवा व वेदप्रचार मण्डल भिवानी के अध्यक्ष 52 वर्षीय **श्री रामफल जी आर्य-भाण्डवा** का 3 सितम्बर को 2014 को प्रात:काल गौ-चारा काटते समय करंट लगने से हृदयविदारक दारुण दु:खदायी आकस्मिक निधन हो गया है। स्वकुल के उज्ज्वल सितारे, परिवार के अनुपम सहारे और आर्यसमाज के महारथी के स्वर्गलोक प्रस्थान से परिजनों व आर्यसमाज भाण्डवा तथा धर्मशास्त्री पर वज्रपात हो गया है। उनके दु:खद देहान्त का समाचार सुनकर सस्नेही आर्य फफक पड़े और हजारों आर्य दु:खसागर में डूब गये। सब ऐसी असह्य पीड़ा अनुभव कर रहे हैं कि जैसे ये भयंकर वज्रपात उनके अपने ही घर में हुआ हो। हो भी क्यों नहीं? रामफल आर्य की उपस्थिति अंधकार में दीपक के समान प्रकाश करती थी। जहाँ-जहाँ वे पहुँचते आर्यजनों में विशेष उत्साह व उमंग का संचार होता था। वे बहुत यशस्वी थे। उनकी ख्याति दूर-दूर तक दिग्दिगन्तरों में चहुँओर फैली हुई थी। जहाँ शरीर के अंग गल जाते थे, ऐसे इलाकों में भी अपने नियम धर्म के पक्के दृढ़व्रतधारी युवक ने मांस-मदिरा का सेवन नहीं किया। सेना में रहते हुए अपने अनेक साथियों को शराब-मांस के सेवन के पाप से बचाया। उनकी गुणगाथा बहुत लम्बे समय तक लाखों व्यक्तियों की स्मृति में छाई रहेगी और आकाशवाणी की भांति कानों में गूंजती रहेगी।

3 सितम्बर को सायंकाल बड़े गमगीन माहौल में पूर्ण वैदिक विधि से उनका अन्त्येष्टि-संस्कार किया गया। पूर्व एस.डी.एम. व न्यायाधीश इन्द्रसिंह आर्य, सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा के संचालक उमेदसिंह आर्य, शेरसिंह आर्य नीमड़ीवाली, प्रो. सत्यपाल आर्य भिवानी, डॉ. देवेन्द्र आर्य वोहरा, सू.मे. शमशेरसिंह रुदड़ौल, गुरुकुल झज्जर के मुख्याधिष्ठाता चाँदसिंह आर्य, छत्रसिंह आर्य रुदड़ौल, मा. नन्दलाल पंचगांव, कर्मवीर आर्य रुदड़ौल, महाशय आजाद सिंह आर्य छील्लर, मनोज आर्य घसौला, बिशन आर्य झोझू, सोमदेव आर्य चरखी, सत्यवान आर्य जेवली, ओमप्रकाश सरपंच पंचगांव, जगमाल एडवोकेट, प्रवीन आर्य व रमेश आर्य बेरला, कर्मवीर आर्य गौरीपुर, प्रवेशार्य बाढ़ड़ा, तेजवीर आर्य किष्किन्धा, सत्यवीर आर्य सलेमपुरिया, महेन्द्र आर्य व जयकरण आर्य धनासरी, मा. हीरासिंह आर्य, मा. सत्यपाल आर्य आदि आर्यनगर, सतेन्द्र आर्य जेवली आदि सैकड़ों क्षेत्रीय आर्यजनों व हजारों ग्रामीणों की उपस्थिति में श्री बलवान आर्य शास्त्री नांधा, अजय आर्य शास्त्री, प्रवीण आर्य शास्त्री, कुलदीप आर्य शास्त्री व गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने रुंधे हुये कंठ से वेदमन्त्र बोलते हुए अत्यधिक मात्रा में घी व हवन सामग्री की आहुति डालते हुए रामफल आर्य का अन्तिम संस्कार किया। पश्चात् प्रतिदिन शोक-संवेदना प्रकट करने वालों का तांता लगा रहा। ढांढस बंधाने के लिए क्रमश: जगदीश आर्य गोकल, मा. निहालसिंह आर्य बारवास, दरियासिंह आर्य आर्यनगर, करतार आर्य आदि रुदड़ौल, डॉ. भूपसिंह आर्य भिवानी, महेश आर्य नन्दगांव, पूर्व विधायक नृपेन्द्र मांढ़ी, भाजपा नेता चन्द्रपाल सांगवान, अध्यापक रणधीर सिंह एवं रवीन्द्र आर्य दगड़ौली, रवीन्द्र आर्य आर्यनगर, सरपंच सज्जनसिंह आर्य आर्यनगर, कर्नल रघुवीर सिंह छील्लर विधायक, जगदीशचन्द्र आर्य बाढ़ड़ा, डॉ. महीपाल जेवली, पं. सुनील चेयरमैन बाढ़ड़ा, पूर्व खण्ड शिक्षा अधिकारी मेदराम, महेन्द्र शास्त्री जेवली, दीपचन्द आर्य भिवानी, दिलसुख आर्य एवं जय भगवान आर्य झोझूकलां, विद्यालय परिवार भाण्डवा, पूर्व विधायक रणबीर मन्दोला आदि, कर्मवीर डालावास, उमेद पातुवास, देवदत्त आर्य प्रधान एवं हरीशचन्द्र आर्य, श्यामसुन्दर आर्य आदि समस्त कार्यकारिणी आर्यसमाज चरखी दादरी, हवासिंह आर्य दादरी, कप्तान धर्मपाल पंचगांव, प्राचार्य हवासिंह व मा. रामस्वरूप हंसावास खुर्द, हवासिंह आर्य वकील नांधा, ज्ञानेन्द्र आर्य भजनोपदेशक, वैद्य दयानन्द गिरि, विश्वामित्र आर्य शास्त्री व विजय पंचगांव-भिवानी, दानवीर अमरसिंह बाढ़ड़ा, वीरेन्द्र आर्य गोपी, पूर्णमल, बीरसिंह सभ्रवाल बाढ़ड़ा, सेठ जयदेव देवराला, हवासिंह आर्य फरटिया, विक्रम शास्त्री ढिघावा, प्रदीप आर्य मांढ़ी, टेकराम आर्य सरपंच मन्दौला, राजकुमार आर्य शास्त्री लाड़, जयसिंह आर्य व रूपेश कुमार हंसावास कलां, रामेश्वर शास्त्री लाड़, धनसिंह शास्त्री खुर्द, मा. मोलड़सिंह श्यामपुरा, धर्मवीर शास्त्री व ब्रह्मदेव लोहारू, चन्द्रसिंह आर्य चरखी, हिम्मतसिंह आर्य सुरेहती, ईश्वरसिंह आर्य धनासरी, वैद्य रणधीर बाढ़ड़ा, सूरजभान आर्य फरटिया भीमा, कर्मवीर वकील दादरी आदि हजारों आर्यजन व परिचित तथा सम्बन्धी जनों ने रामफल आर्य के घर पहुँचकर परिवार को सांत्वना दी। शोकस्थल पर धर्मगुरु धर्मपाल आर्य धीर शास्त्री के द्वारा प्रतिदिन प्रात: यज्ञ एवं सायंकाल शांतिकथा की गई।

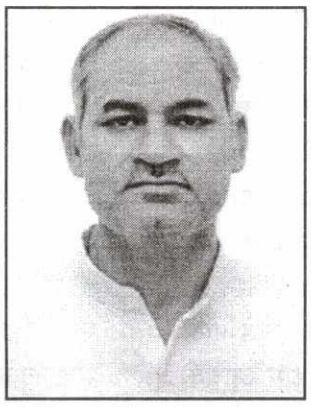

रामफल जी आर्य, भाण्डवा

शोक-समाप्ति शांतियज्ञ भाद्रपद पूर्णिमा वि० 2071 दिनांक 9 सितम्बर 2014 को किया गया। रामफल आर्य के ज्येष्ठ पुत्र डॉ. वीरपाल आर्य को उत्तराधिकारी बनाया। धर्मशास्त्री ने आर्यसमाज भाण्डवा की ओर से शोक प्रस्ताव पढ़ा। तदनन्तर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल, सभा के अधिकारी अत्तरसिंह आर्य स्नेही, महाशय आजादसिंह तथा पूर्व एस.डी.एम. न्यायाधीश इन्द्रसिंह आर्य ने अपने प्रवचनों से रामफलार्य को श्रद्धांजलि, परिजनों को सांत्वना दी व मार्गदर्शन किया। आर्यसमाज भाण्डवा ने उनकी स्मृति में आर्यसमाज प्रचारक सम्मान पुरस्कार आरम्भ करने का संकल्प लिया।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति स्वामी देवव्रत सरस्वती, भजनोपदेशक पं. रामरख आर्य, शेरसिंह आर्य फरटिया भीमा, विमलेश आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल भिवानी, प्रो. राजपाल बरहाणा ने दूरभाष पर शोकसंतप्त परिजनों को सांत्वना दी।

-धर्मपाल आर्य 'धीर' शास्त्री, संस्थापक व मंत्री आर्यसमाज भाण्डवा जिला भिवानी

शिक्षा से होता है जीवन में उजियारा

कोटा, 15 सितम्बर। व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का सूर्य उदय होने पर ही अज्ञानता रूपी अंधकार दूर होता है। इस सूर्य की रश्मियां अपने उजियारे के द्वारा जीवन में खुशियां भर देती हैं। ज्ञान का प्रकाश न केवल स्वयं के जीवन में बल्कि सामर्थ्य के अनुसार दूसरों के जीवन में भी फैलाना चाहिए। एक दीपक से दूसरा दीपक जलाएं और ज्ञान की लौ को धीमा न पड़ने दें। यह कहना है पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा का। वे मधुस्मृति संस्थान में निराश्रित बच्चों को समिति की ओर से शिक्षण सामग्री एवं वस्त्र वितरण कार्यक्रम के दौरान संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर बच्चों को स्कूल बेग, पेन, पेंसिल, कॉपियां और टीशर्ट वितरित की गई।

चड्ढा ने कहा कि ईश्वर ने चर और अचर जगत् को बनाया है। सभी को एक जैसा सामर्थ्य, बल और बुद्धि दी है। हम सभी का पिता स्वयं परमेश्वर है तो कोई भी अनाथ कैसे हो सकता है? ईश्वर की बनाई हुई इन सजीव मूर्तियों की सच्ची पूजा करके साक्षात् ईश्वर को पाया जा सकता है। चड्ढा ने कहा कि पिछले 25 वर्षों के दौरान मधुस्मृति संस्थान से एक अनोखा रिश्ता कायम हो गया है। यहां से सभी अच्छे नागरिक बनकर निकलें। महिला शाखा की उपाध्यक्ष यशोदा निझावन ने कहा कि संस्थान की ओर से जो शिक्षा मिलती है, उसे जीवन में उतारकर आगे बढ़ना चाहिए।

इस दौरान समिति के उपाध्यक्ष किशोरीलाल गुलाटी ने कहा कि व्यक्ति को श्रेष्ठ कर्म करने चाहिएं। दूसरों की सेवा करने से मन पवित्र होता है। उपाध्यक्ष वीरकुमार वधवा ने कहा कि समिति गत बीस वर्षों से संस्थान में कार्य कर रही है। इसके अलावा समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। विभिन्न सरकारी स्कूलों में शिक्षण सामग्री का वितरण, वस्त्र वितरण, सर्दियों में फुटपाथों पर कम्बल वितरण, कुष्ठ रोगियों को अन्न-सामग्री वितरण प्रमुख रूप से किए जा रहे है। बच्चों को नई टीशर्ट भेंट की गई, जिसे पहनकर वे उत्साह से भर गए। आज वितरित की गई सामग्री किशोरीलाल गुलाटी द्वारा उपलब्ध कराई गई।

इस अवसर पर अर्जुनदेव चड्ढा, वीरकुमार वधवा, उपमंत्री सागर पिपलानी, यशोदा निझावन, किशोरीलाल गुलाटी, मधु दुआ, पूनम चड्ढा आदि उपस्थित थे। संस्थान की निदेशक श्रीमती बृजबाला निर्भीक ने आभार जताया। कार्यक्रम के प्रारंभ में संस्थान के बच्चों द्वारा अतिथियों का स्वागत स्वागतगान करके व पुष्पगुच्छ भेंट करके किया। **-अर्जुनदेव चड्ढा**

thearyasamaj.org

स्वास्थ्य-चर्चा....

मोटापा घटाना

मोटापा कई बीमारियों को जन्म देता है। जैसे कि मोटापे के कारण हार्ट अटैक, ब्लड प्रेशर, थकान आदि रोग जन्म लेते हैं। खासकर महिलाओं में श्वेतप्रदर, मासिक धर्म में अनियमितता, बाँझपन, सांस फूलना जैसे रोग होने का खतरा ज्यादा रहता है। मोटापे से गुर्दे की बीमारी, मधुमेह ग्रस्त मोटे लोगों की मृत्यु दर बढ़ती है। भारी बदन के लोगों को शल्यक्रिया के दौरान ज्यादा खतरा रहता है। गठिया जैसे रोग उन्हें जल्दी होते हैं।

शरीर का बढ़ा हुआ वजन घटना बहुत कठिन है, इसलिए वजन को बढ़ने से रोको। पुरुष के लिए 70 किलो एवं महिला के लिए 60 किलो वजन 'लक्ष्मण रेखा' है। मोटापा एक अभिशाप, मुसीबतों की ड़ है। मोटापा मौत को जल्दी बुलाता है। मोटे शरीर में मोटी बीमारियाँ, मोटी जाँच, मोटी फीस एवं डाक्टर की जरूरत रहती है। यदि मधुर मुस्कान एवं मस्ती चाहिए तो मोटापे से मुक्ति पायें। इतना नहीं खायें कि रोगी बन जायें। कम खायें, लम्बी जिन्दगी जीयें। खुराक घटाओ, घूमना बढ़ाओ, मोटापे से मुक्ति पाओ। खाना खाने का स्वभाव बदले बिना बदन का बढ़ा हुआ वजन कम करना आसान नहीं। **चखो पर चरो मत।** बदन का बढ़ा हुआ वजन बाईपास सर्जरी का वारंट है। बदन के बढ़े हुए वजन में यदि बुनियादी बदलाव लाना है तो बाटी, बर्फी, बादाम, ब्रेड और बिस्कुट कम से कम खाओ, व्यायाम करो, घूमने जाओ।

शारीरिक मेहनत कम करने वालों को शरीर की दैनिक क्षतिपूर्ति के लिए केवल 1500 से 2000 कैलोरी वाला भोजन पर्याप्त है। फिर भी ऐसे लोग 3000 से 4000 कैलोरी वाला भारी भोजन करते हैं। इस अतिरिक्त कैलोरी से शरीर में चर्बी जमा होने लगती है।

मोटापा शरीर में चर्बी जमा होने से बढ़ता है। अत: चर्बी (Fats) तथा कार्बोहाइड्रेट्स (मीठे) पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। मोटापे से उच्च रक्तचाप, मधुमेह, जोड़ों का दर्द तथा चलने में दर्द होता है।

मोटापे के कारण—चर्बी बढ़ाने वाले चीजों के अधिक सेवन, जैसे—मांस, घी, चावल, आलू, तली हुई चीजें, मिठाइयाँ, दानेदार चीनी, केला, अंगूर, चिकने पदार्थ मोटापा बढ़ाते हैं। दिन में अधिक सोना, आवश्यकता अनुसार शारीरिक श्रम न करना, बार-बार खाना, पाचनशक्ति ठीक न होने से भी मोटापा बढ़ता है। मोटापे के मामलों में इसके पीछे आवश्यकता से अधिक भोजन करना सबसे बड़ा कारण होता है। मासिक धर्म कम होने से स्त्रियों में मोटापा बढ़ता है।

मोटापा घटाने के लिए भोजन कम मात्रा में लें। भोजन के स्थान पर फल, सब्जियों का सेवन, भोजन करने के एक घण्टे बाद पानी पीयें, ठण्डे पानी से स्नान करें। शारीरिक श्रम अधिक और कभी-कभी उपवास करें। मोटापा घटाने के लिए भोजन की इच्छा पूरी होने से पहले ही खाना बन्द कर उठ जाना चाहिए। डॉक्टरों ने कम खाने के लिए संगीत सुनने या पुस्तक पढ़ने की सलाह दी है ताकि ध्यान बंटा रहे।

किसी भी प्रकार का भोजन न करके केवल फलाहार पर कुछ सप्ताह रहना चाहिये। घी, शक्कर, चावल, मिठाई नहीं खानी चाहिये।

शरीर को सुडौल, सुन्दर बनाने और मोटापा-जनित कुरूपता को दूर करने के लिए—

1. सन्तुलित स्वास्थ्यवर्धक और आन्तरिक शुद्धि करने वाला भोजन करें जिससे शरीर में व्याप्त विष नष्ट हो जाये।
2. शरीर में व्याप्त विषों को मल, मूत्र या पसीने द्वारा बाहर निकालें। इसके लिए कब्ज दूर करें, पेशाब अधिक हो, इसके लिए तरल पदार्थ अधिक लें। शरीर से पसीना निकालें।
3. गहरे लम्बे श्वास लें। शरीर में ऑक्सीजन अधिक पहुंचेगी और शरीर में व्याप्त विष इससे नष्ट हो जायेंगे।
4. नियमित व्यायाम करें। इससे शरीर सुडौल और सुन्दर बनता है, अंग विशेष पर जमी चर्बी नष्ट हो जाती है।
5. मालिश करें। अंग विशेष में व्याप्त मोटापे पर भी मालिश करें।
6. विश्रांति (Relaxation) शरीर तथा मस्तिष्क दोनों को शिथिल कर दें। इससे तनाव दूर हो जाता है, रक्तसंचार बढ़ता है तथा शरीर में व्याप्त विष निकल जाते हैं।
7. स्त्री, पुरुष दोनों भूखे पेट या खाने के पाँच घण्टे बाद रस्सी कूदें।
8. वैज्ञानिकों के अब स्लिम एंड थिन बनने के लिए एक्सरसाइज या डाइटिंग करने के बजाय सिर्फ कैल्शियम खाने पर भी जोर दिया है। कैल्शियम से एक तरह का हार्मोन रिलीज होता है जो मेटाबोलिज्म और रक्त संचार को संतुलित करता है। इससे कैलोरीज जलती है और मोटापा अपने-आप घट जाता है। भोजन में कैल्शियम की मात्रा बढ़ायें।

वजन जानने का सरल मापदण्ड-वयस्क होने पर लम्बाई के अनुसार एक इंच का वजन एक किलो मानना चाहिए। जैसे 5 फीट के व्यक्ति का वजन 60 किलो होना चाहिए।

मोटापा से शरीर बेडौल, भद्दा लगता है। नारियों के नितम्ब, कूल्हे (Hips) प्राय: मोटे हो जाते हैं। निरन्तर गत्यात्मकता के अभाव में नितम्ब मोटे हो जाते हैं। गत्यात्मकता की कमी से मांसपेशियां लचीलापन छोड़ देती हैं। इससे उनका आकार समाप्त होने लगता है, वे बाहर फैलने लगते हैं। नितम्ब न केवल भारी ही होते हैं अपितु आकार में भी बढ़ जाते हैं। अत: बिना चर्बी के भी नितम्ब बढ़ सकते हैं।

शरीर को गतिशील रखने एवं उचित भोजन के द्वारा ही शरीर को सुडौल रखा जा सकता है। सुडौल शरीर के लिए व्यायाम आवश्यक है। नित्य आधा घण्टा तेजी से घूमने जायें, कोई व्यायाम करें, रस्सी कूदना भी बहुत अच्छा है। कोई भी व्यायाम 15 मिनट नित्य करें।

घूमना-मोटापे को एकदम नहीं घटाना चाहिए। तीन मील प्रति घण्टा, प्रतिदिन घूमने से एक महीने में एक किलो वजन की कमी आती है जो कि आदर्श अभ्यास है।

करेला-करेले के रस में एक नींबू का रस मिलाकर प्रात: पीने से मोटापा कम होता है।

फल-सब्जियाँ-सब्जियाँ और फलों में कैलोरी कम होती, अत: ये अधिक खायें। केला, चीकू मोटापा बढ़ाते हैं, अत: ये नहीं खायें। स्वाद के लिए फल-सब्जियों पर नमक नहीं डालें। नमक कम से कम खायें। शक्कर, चिकनाईदार चीजें जैसे घी, मक्खन, शकरकंदी नहीं खायें।

चाय-चाय में पोदीना डालकर पीने से मोटापा कम होता है।

नमक-मोटापा कम करने के लिए नमक रहित भोजन करना चाहिए। इससे वजन कम होता है।

मालिश-यदि पेट, तोंद बढ़ गई हो तो मालिश करके नित्य उठ-बैठ करें। रस्सी कूदने से पेट आगे नहीं बढ़ता।

नींबू-(1) एक नींबू स्वाद के अनुसार सेंधा नमक, एक पाव गर्म पानी में मिलाकर प्रात: भूखे पेट दो माह पीने से मोटापा कम होता है। यह प्रयोग गर्मी के मौसम में ज्यादा उपयोगी है।

(2) एक नींबू, एक गिलास गर्म पानी और दो चम्मच शहद मिलाकर चार महीने तक पीने से मोटापा कम होता है।

(3) पालक के रस में नींबू मिलाकर पीने से मोटापा कम होता है।

चना-चने की भीगी हुई दाल और शहद मिलाकर नित्य प्रात: खाने से मोटापा कम होता है।

टमाटर-जिनका भार अधिक है व अन्नाहार पर नियन्त्रण करते हैं, व्यायामों और योगासनों पर ध्यान देते हैं-टमाटर उनके लिए हितकारी है, क्योंकि शरीर से विजातीय द्रव्य, पदार्थ व आंतों में रुका, अटका खाना शरीर से बाहर निकालने में पूरी मदद करता है। नित्य कच्चा टमाटर, नमक और प्याज के साथ खाने से आप विश्वास करें, आपका मोटापा धीरे-धीरे कम होने लगेगा।

दही-दही मोटापा कम करने में लाभप्रद है।

छाछ-छाछ में काला नमक और अजवाइन मिलाकर पीने से मोटापा कम होता है।

तुलसी-तुलसी के पत्तों का रस, शहद तथा एक कप पानी में मिलाकर पीने से मोटापा घटता है।

क्रमश: अगले अंक में....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।